Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

कृत्रिम मेधा के युग में हिंदी साहित्य : चुनौतियाँ एवं अवसर

[1]**प्रो. संतोषकुमार यशवंतकर***
अध्यक्ष हिंदी विभाग,हिंदी विभाग श्री शिवाजीराव पंडित,
कला विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, शिवाजीनगर, गढी.

[2]**प्रो. मुखत्यार शेख**
अध्यक्ष हिंदी विभाग,एकता शिक्षण प्रसाक मंडळ संचलित,
कला महाविद्यालय, बिडकीन,त. पैठण जि. छत्रपती संभाजीनगर

शोध सार

इक्कीसवीं सदी का वर्तमान चरण विज्ञान और तकनीक की अभूतपूर्व प्रगति का युग है। कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence) ने मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में गहरा हस्तक्षेप किया है और साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। आज मशीनें न केवल सूचनाओं का विश्लेषण कर रही हैं, बल्कि कविता, कहानी, निबंध, अनुवाद और आलोचना जैसी रचनात्मक गतिविधियों में भी प्रवेश कर चुकी हैं। ऐसी स्थिति में हिंदी साहित्य के समक्ष जहाँ एक ओर नए अवसर उत्पन्न हुए हैं, वहीं दूसरी ओर मौलिकता, रचनाकार की भूमिका, साहित्य की संवेदना और साहित्यिक मूल्यों के संरक्षण को लेकर गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। यह शोधालेख कृत्रिम मेधा की अवधारणा, उसके साहित्यिक प्रभाव, उससे उत्पन्न अवसरों और संकटों का विस्तृत एवं संतुलित विश्लेषण प्रस्तुत करता है।''

बीज शब्द: *कृत्रिम मेधा, हिंदी साहित्य, डिजिटल युग, रचनात्मकता, तकनीक और संस्कृति, साहित्यिक मूल्य, मौलिकता, संवेदना, लेखक की भूमिका, भविष्य का साहित्य ।*

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
प्रो. संतोषकुमार यशवंतकर
Email: santoshyashwantkar@gmail.com

प्रस्तावना

मानव सभ्यता का इतिहास मूलतः विकास और परिवर्तन का इतिहास है। यह परिवर्तन केवल सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि बौद्धिक, सांस्कृतिक और तकनीकी स्तर पर भी निरंतर होता रहा है। जब मनुष्य ने पहली बार गुफाओं की दीवारों पर चित्र बनाए, तब से लेकर लिपि के आविष्कार, हस्तलिखित पांडुलिपियों, मुद्रण कला और अब डिजिटल माध्यमों तक — अभिव्यक्ति के साधन लगातार बदलते रहे हैं। प्रत्येक तकनीकी परिवर्तन ने न केवल मनुष्य के जीवन-व्यवहार को बदला है, बल्कि उसकी सोच, संवेदना और रचनात्मकता की दिशा को भी प्रभावित किया है। वाल्टर ओंग का यह कथन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि— "हर नई तकनीक मनुष्य की सोच और अभिव्यक्ति की संरचना बदल देती है।"[1] वास्तव में, मुद्रण कला के आगमन ने साहित्य को राजदरबारों और सीमित विद्वत् समाज से निकालकर जनसामान्य तक पहुँचाया। इसी प्रकार आज डिजिटल क्रांति और कृत्रिम मेधा ने साहित्य की रचना, प्रसार और ग्रहण — तीनों के स्वरूप में अभूतपूर्व परिवर्तन उत्पन्न कर दिया है।

हिंदी साहित्य की परंपरा मूलतः मानवीय संवेदना, सामाजिक चेतना और जीवन-अनुभव से गहरे रूप में जुड़ी रही है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य की आत्मा को परिभाषित करते हुए कहा था—"साहित्य केवल शब्दों का खेल नहीं, वह मनुष्य की आत्मा की अभिव्यक्ति है।"[2] परंतु आज जब कृत्रिम मेधा कविता, कहानी और निबंध जैसी रचनाएँ तैयार करने लगी है, तब यह प्रश्न अत्यंत गंभीर हो उठता है कि क्या मशीन भी 'आत्मा की अभिव्यक्ति' कर सकती है? और यदि नहीं, तो साहित्य और तकनीक के इस नए संबंध को हम किस प्रकार समझें?

इन्हीं प्रश्नों के आलोक में यह शोधालेख कृत्रिम मेधा के प्रभावों का अध्ययन करते हुए हिंदी साहित्य के सामने उपस्थित अवसरों और चुनौतियों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है।

1. कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence) आधुनिक विज्ञान और तकनीक की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। सामान्य अर्थ में कृत्रिम मेधा से तात्पर्य उस तकनीक से है जिसके माध्यम से मशीनों में मानव जैसी सोचने, समझने, तर्क करने, विश्लेषण करने और निर्णय लेने की क्षमता विकसित की जाती है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यह मानव मस्तिष्क की बौद्धिक प्रक्रियाओं का तकनीकी अनुकरण है।

2. प्रारंभिक दौर में कंप्यूटर केवल गणना करने वाली यांत्रिक मशीनें थे। वे केवल वही कार्य कर सकते थे, जिनके लिए उन्हें स्पष्ट निर्देश दिए जाते थे। किंतु धीरे-धीरे कंप्यूटर विज्ञान, गणित, भाषा-विज्ञान और तंत्रिका-विज्ञान (Neuroscience) के संयुक्त विकास से ऐसी प्रणालियाँ विकसित होने लगीं, जो सीख सकती थीं, स्वयं को सुधार सकती थीं और जटिल समस्याओं का समाधान कर सकती थीं। आज स्थिति यह है कि मशीनें केवल अंकगणितीय कार्य ही नहीं कर रहीं, बल्कि भाषा समझने, चेहरे और चित्र पहचानने, संगीत रचने, चित्र बनाने और यहाँ तक कि कविता और कहानी लिखने जैसी सृजनात्मक गतिविधियों में भी सक्षम हो चुकी हैं।

3. यूनेस्को की एक महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि कृत्रिम मेधा अब केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं रह गई है, बल्कि वह संस्कृति, शिक्षा, संचार और ज्ञान-उत्पादन की पूरी प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनती जा रही है। आज शिक्षा, चिकित्सा, पत्रकारिता, प्रशासन और कला — सभी क्षेत्रों में AI का प्रभाव निरंतर बढ़ता जा रहा है।

4. तकनीकी दृष्टि से कृत्रिम मेधा मुख्यतः "डेटा" पर आधारित होती है। मशीनें विशाल मात्रा में उपलब्ध सूचनाओं (Big Data) का विश्लेषण करके उनमें से पैटर्न खोजती हैं और उसी के आधार पर भविष्यवाणी या रचना करती हैं। उदाहरण के लिए, जब कोई AI कविता या कहानी लिखता है, तो वह वास्तव में पहले से उपलब्ध लाखों-करोड़ों पाठों के भाषा-रूपों, शैलियों और संरचनाओं का सांख्यिकीय विश्लेषण करके एक नया पाठ तैयार करता है। इस प्रक्रिया में न तो कोई व्यक्तिगत अनुभव होता है, न कोई संवेदना और न ही कोई जीवन-संघर्ष।

5. यही कारण है कि यह स्मरण रखना अत्यंत आवश्यक है कि मशीन की यह "बुद्धि" अनुभवजन्य नहीं होती, बल्कि वह पूरी तरह गणनात्मक और सांख्यिकीय होती है। मशीन न तो दुःख महसूस कर सकती है, न सुख, न प्रेम और न पीड़ा। वह केवल इन भावनाओं से जुड़े शब्दों और वाक्य-संरचनाओं का अनुकरण कर सकती है। इसी बिंदु पर मानव सृजन और मशीन-निर्मित पाठ के बीच मूलभूत अंतर स्पष्ट हो जाता है।

6. मानव रचना का स्रोत उसका जीवनानुभव, स्मृति, संवेदना और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश होता है, जबकि मशीन-निर्मित पाठ का स्रोत केवल डेटा और एल्गोरिद्म होते हैं। इसलिए यद्यपि कृत्रिम मेधा द्वारा निर्मित रचनाएँ देखने में साहित्य जैसी प्रतीत हो सकती हैं, फिर भी उनके पीछे वह "जीवन-स्पर्श" नहीं होता, जो मनुष्य की रचनात्मकता की आत्मा है।

7. इस प्रकार कृत्रिम मेधा का विकास एक ओर जहाँ मानव सभ्यता की बौद्धिक प्रगति का प्रमाण है, वहीं दूसरी ओर वह हमें यह सोचने के लिए भी विवश करता है कि सृजन, चेतना और संवेदना का वास्तविक अर्थ क्या है, और साहित्य जैसे मानवीय क्षेत्र में तकनीक की सीमा कहाँ तक होनी चाहिए।

8. हिंदी साहित्य और तकनीक : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य हिंदी साहित्य का इतिहास यह सिद्ध करता है कि साहित्य कभी भी समाज और तकनीक से कटकर नहीं रहा। हस्तलिखित पांडुलिपियों के युग से लेकर मुद्रण कला के विकास तक, हर तकनीकी परिवर्तन ने साहित्य के रूप, विस्तार और पाठक-वर्ग को प्रभावित किया है।

मुद्रण यंत्र के आगमन से साहित्य व्यापक समाज तक पहुँचा। पत्र-पत्रिकाओं ने साहित्य को सामाजिक चेतना से जोड़ा। अब डिजिटल युग में ब्लॉग, ई-पुस्तकें और सोशल मीडिया ने साहित्य को और अधिक लोकतांत्रिक बना दिया है।[9]

कृत्रिम मेधा के युग में हिंदी साहित्य के अवसर

(क) साहित्य का वैश्विक प्रसार

AI आधारित अनुवाद तकनीकों ने हिंदी साहित्य को विश्व-पाठक तक पहुँचाने का मार्ग खोल दिया है। आज प्रेमचंद, कबीर और निराला की रचनाएँ अनेक भाषाओं में उपलब्ध हो रही हैं।

(ख) लेखक के लिए सहायक उपकरण

मार्शल मैकलुहान का कथन है— "तकनीक साधन है, साध्य नहीं।"[8]

AI लेखक को संदर्भ खोजने, भाषा सुधारने और प्रारूप गढ़ने में सहायता कर सकता है।[9]

(ग) नए साहित्यिक रूपों का विकास

डिजिटल कविता, हाइपरटेक्स्ट कथा, इंटरैक्टिव साहित्य और मल्टीमीडिया लेखन जैसी विधाएँ साहित्य की अभिव्यक्ति के नए द्वार खोल रही हैं।

(घ) साहित्य का संरक्षण

हजारों दुर्लभ ग्रंथ और पांडुलिपियाँ अब डिजिटल रूप में सुरक्षित की जा रही हैं। कृत्रिम मेधा का प्रभाव केवल तकनीकी या व्यावहारिक क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि उसने साहित्य जैसे सृजनात्मक क्षेत्र में भी अनेक नए द्वार खोल दिए हैं। यदि विवेकपूर्ण ढंग से इसका उपयोग किया जाए, तो यह हिंदी साहित्य के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर सिद्ध हो सकता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित बिंदु विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

(1) साहित्य का वैश्विक प्रसार

हिंदी साहित्य की सबसे बड़ी समस्या लंबे समय तक उसका सीमित भाषायी क्षेत्र रहा है। उत्कृष्ट रचनाएँ होते हुए भी वे विश्व-पाठक तक नहीं पहुँच पाती थीं। किंतु कृत्रिम मेधा आधारित अनुवाद तकनीकों ने इस स्थिति में एक क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित किया है। आज मशीन-ट्रांसलेशन की सहायता से किसी भी हिंदी रचना का अनुवाद कुछ ही क्षणों में अनेक भाषाओं में किया जा सकता है।

इसके परिणामस्वरूप प्रेमचंद, कबीर, तुलसीदास, निराला, महादेवी वर्मा और अज्ञेय जैसे रचनाकारों की कृतियाँ अब केवल हिंदी क्षेत्र तक सीमित नहीं रह गई हैं, बल्कि वे विश्व-साहित्य के व्यापक मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगी हैं। इससे एक ओर हिंदी साहित्य की अंतरराष्ट्रीय पहचान सुदृढ़ हो रही है, वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति और जीवन-दृष्टि भी विश्व के सामने अधिक व्यापक रूप में प्रस्तुत हो रही है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि यद्यपि मशीन-निर्मित अनुवाद पूरी तरह साहित्यिक नहीं होते, फिर भी वे एक "प्रारंभिक सेतु" (First Bridge) का काम करते हैं, जिसके माध्यम से विदेशी पाठक हिंदी साहित्य की ओर आकर्षित हो सकते हैं। बाद में विद्वान अनुवादक उन्हें परिष्कृत रूप दे सकते हैं।

(2) लेखक के लिए सहायक उपकरण

मार्शल मैकलुहान का यह कथन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि— "तकनीक साधन है, साध्य नहीं।"[8] यदि इस दृष्टि से कृत्रिम मेधा को देखा जाए, तो यह लेखक के लिए एक सहायक उपकरण के रूप में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है। आज AI आधारित प्रणालियाँ लेखक को संदर्भ सामग्री खोजने, विषय से संबंधित सूचनाएँ जुटाने, भाषा की शुद्धता जाँचने, वाक्य-संरचना सुधारने और प्रारूप (Draft) तैयार करने में सहायता कर रही हैं।[9]

इससे लेखक का समय और श्रम दोनों बचते हैं और वह अपनी सृजनात्मक ऊर्जा को भाषा की तकनीकी कठिनाइयों से मुक्त होकर विचार और संवेदना की गहराई पर केंद्रित कर सकता है। विशेष रूप से शोध और आलोचना के क्षेत्र में AI एक उपयोगी सहायक सिद्ध हो सकता है, क्योंकि वह विशाल सामग्री को शीघ्रता से खोजकर व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

(3) नए साहित्यिक रूपों का विकास

कृत्रिम मेधा और डिजिटल तकनीक ने साहित्य की अभिव्यक्ति के पारंपरिक रूपों को चुनौती देते हुए नए साहित्यिक रूपों को जन्म दिया है। आज डिजिटल कविता, हाइपरटेक्स्ट कथा, इंटरैक्टिव साहित्य, मल्टीमीडिया लेखन और ऑडियो-विजुअल कथा जैसे नए प्रयोग सामने आ रहे हैं।

इन रूपों में पाठक केवल एक निष्क्रिय ग्रहणकर्ता नहीं रहता, बल्कि वह कई बार रचना की संरचना में भी भागीदार बन जाता है। उदाहरण के लिए, इंटरैक्टिव कथा में पाठक स्वयं यह तय कर सकता है कि कहानी किस दिशा में आगे बढ़े। इस प्रकार साहित्य और पाठक के संबंध में एक नया आयाम जुड़ता है।

यह परिवर्तन यह संकेत देता है कि साहित्य अब केवल मुद्रित पृष्ठों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह एक जीवंत, गतिशील और बहुआयामी अनुभव बनता जा रहा है।

(4) साहित्य का संरक्षण

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

कृत्रिम मेधा और डिजिटल तकनीक का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान साहित्यिक धरोहर के संरक्षण के क्षेत्र में दिखाई देता है। आज हजारों दुर्लभ ग्रंथ, प्राचीन पांडुलिपियाँ, पुरानी पत्रिकाएँ और अप्राप्य पुस्तकें डिजिटल रूप में सुरक्षित की जा रही हैं।

इस प्रक्रिया से न केवल इन ग्रंथों का नष्ट होने से बचाव हो रहा है, बल्कि वे शोधार्थियों और पाठकों के लिए सरलता से सुलभ भी हो रही हैं। इसके अतिरिक्त, AI की सहायता से इन ग्रंथों का पुनर्पाठ, वर्गीकरण और सरल भाषा में रूपांतरण भी संभव हो रहा है, जिससे साहित्यिक परंपरा और अधिक व्यापक समाज से जुड़ रही है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि कृत्रिम मेधा यदि विवेकपूर्ण और संतुलित ढंग से प्रयुक्त की जाए, तो वह हिंदी साहित्य के लिए केवल संकट नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक अवसर भी सिद्ध हो सकती है — ऐसा अवसर, जो साहित्य के प्रसार, संरक्षण और नवाचार — तीनों को एक साथ आगे बढ़ा सकता है।

कृत्रिम मेधा से उत्पन्न चुनौतियाँ

(क) मौलिकता का संकट

(ख) रचनाकार की भूमिका पर संकट

(घ) साहित्य का बाजारीकरण

कृत्रिम मेधा से उत्पन्न चुनौतियाँ (विस्तारित रूप)

कृत्रिम मेधा ने जहाँ एक ओर साहित्य के क्षेत्र में अनेक नए अवसर उत्पन्न किए हैं, वहीं दूसरी ओर उसने कुछ ऐसे गहरे संकट भी खड़े कर दिए हैं, जो साहित्य की मूल आत्मा और रचनात्मकता के अस्तित्व से जुड़े हुए हैं। यदि इन चुनौतियों पर गंभीरता से विचार नहीं किया गया, तो साहित्य धीरे-धीरे अपने मानवीय स्वरूप को खोकर एक यांत्रिक और बाज़ार-नियंत्रित "कंटेंट" मात्र बनकर रह सकता है। इस संदर्भ में निम्नलिखित समस्याएँ विशेष रूप से विचारणीय हैं—

(क) मौलिकता का संकट

साहित्य की सबसे बड़ी पहचान उसकी मौलिकता और नवीनता होती है। प्रत्येक सच्ची रचना अपने साथ एक नया अनुभव, एक नई दृष्टि और एक नया भाव-बोध लेकर आती है। किंतु कृत्रिम मेधा द्वारा निर्मित रचनाओं के संदर्भ में सबसे बड़ा प्रश्न यही उठता है कि क्या वे वास्तव में मौलिक हो सकती हैं? निर्मल वर्मा का कथन यहाँ अत्यंत प्रासंगिक है—"रचना की मौलिकता लेखक के अनुभव और दृष्टि से जन्म लेती है, मशीन से नहीं।"

AI की कार्यप्रणाली मूलतः पूर्व में उपलब्ध विशाल सामग्री (डेटा) के विश्लेषण पर आधारित होती है। वह पुराने पाठों के भाषा-रूपों, शैलियों और संरचनाओं को मिलाकर एक नया-सा पाठ तैयार करता है। इस प्रक्रिया में वह कुछ नया गढ़ता हुआ प्रतीत तो होता है, पर वास्तव में वह पहले से मौजूद विचारों और रूपों का ही पुनर्संयोजन होता है। इस कारण साहित्य में दोहराव, सतहीपन और विचार-रिक्तता का खतरा बढ़ जाता है।

यदि भविष्य में इस प्रकार की मशीन-निर्मित रचनाओं की संख्या अत्यधिक बढ़ गई, तो साहित्य की मौलिकता और सृजनात्मक नवीनता गंभीर संकट में पड़ सकती है।

(ख) रचनाकार की भूमिका पर संकट

कृत्रिम मेधा के बढ़ते प्रयोग से एक और महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा होता है — जब मशीनें कविता, कहानी और निबंध लिखने लगेंगी, तो लेखक की भूमिका क्या रह जाएगी? अज्ञेय का यह कथन इस संदर्भ में अत्यंत सार्थक है—"कलाकार का काम सृजन है, केवल संयोजन नहीं।"

मशीन केवल संयोजन कर सकती है — वह शब्दों, वाक्यों और शैलियों को जोड़-घटा सकती है, परंतु वह उस आंतरिक सृजनात्मक आवेग (Creative Impulse) को उत्पन्न नहीं कर सकती, जो मनुष्य को लिखने के लिए प्रेरित करता है। यदि समाज धीरे-धीरे मशीन-निर्मित पाठ को ही "साहित्य" मानने लगे, तो वास्तविक रचनाकार की सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका कमजोर पड़ सकती है। इससे साहित्य एक जीवंत मानवीय कर्म न रहकर एक यांत्रिक उत्पादन-प्रक्रिया बन सकता है।

(ग) साहित्य की संवेदना का अभाव

साहित्य का मूल आधार केवल विचार नहीं, बल्कि संवेदना है। मनुष्य जो कुछ जीता है, सहता है और अनुभव करता है, वही उसकी रचना में ढलता है। नामवर सिंह ने ठीक ही कहा है—"जिस रचना में मनुष्य का दुःख-सुख और संघर्ष नहीं, वह साहित्य नहीं हो सकती।"[3]

मशीन न तो दुखी हो सकती है, न आनंदित, न प्रेम कर सकती है और न पीड़ा सह सकती है। वह केवल इन भावनाओं से जुड़े शब्दों और वाक्य-

रूपों की नकल कर सकती है। इसलिए AI द्वारा रचित साहित्य में भावनाओं का आभास तो हो सकता है, पर उनकी गहराई और प्रामाणिकता नहीं।

इससे यह खतरा उत्पन्न होता है कि भविष्य का साहित्य धीरे-धीरे एक भावनात्मक रूप से खोखला और संवेदनाहीन पाठ-समूह बन जाए।

(घ) साहित्य का बाजारीकरण

कृत्रिम मेधा का एक और गंभीर दुष्परिणाम साहित्य का अत्यधिक बाजारीकरण है। आज AI की सहायता से बहुत कम समय में बहुत बड़ी मात्रा में सामग्री (Content) तैयार की जा सकती है। इससे साहित्य का मूल्य उसकी गुणवत्ता से अधिक उसकी "खपत" (Consumption) से आँका जाने लगता है। नामवर सिंह का यह कथन यहाँ अत्यंत प्रासंगिक है—"जब बाज़ार साहित्य को चलाने लगे, तब साहित्य नहीं, उत्पाद बनता है।"

इस प्रवृत्ति के बढ़ने से साहित्य धीरे-धीरे एक सांस्कृतिक और बौद्धिक साधना न रहकर केवल एक उपभोक्ता वस्तु बन सकता है। इससे गंभीर, विचारोत्तेजक और संवेदनशील साहित्य हाशिए पर चला जाएगा और सतही, मनोरंजक तथा तुरंत बिकने वाला "कंटेंट" मुख्यधारा पर छा जाएगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि कृत्रिम मेधा से उत्पन्न चुनौतियाँ केवल तकनीकी नहीं, बल्कि गहरे सांस्कृतिक और साहित्यिक संकटों से जुड़ी हुई हैं। यदि इन पर समय रहते गंभीरता से विचार नहीं किया गया, तो साहित्य की मानवीय आत्मा और उसकी सृजनात्मक गरिमा दोनों ही खतरे में पड़ सकती हैं।

क्या कृत्रिम मेधा साहित्यकार बन सकती है?

AI शैली और भाषा की नकल कर सकता है, किंतु वह जीवन को जी नहीं सकता। मुक्तिबोध का कथन है—"भविष्य का साहित्य वही होगा जो मनुष्य को मनुष्य बनाए रखे।"[6]

अतः AI साहित्यकार नहीं, बल्कि साहित्यकार का सहायक ही हो सकता है।

कृत्रिम मेधा के साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश के साथ ही सबसे बुनियादी और महत्वपूर्ण प्रश्न यही उठता है कि क्या मशीन को वास्तव में "साहित्यकार" कहा जा सकता है? या दूसरे शब्दों में, क्या साहित्य जैसी मानवीय, संवेदनशील और अनुभव-आधारित विधा को कोई यांत्रिक प्रणाली आत्मसात कर सकती है?

यह निर्विवाद सत्य है कि कृत्रिम मेधा भाषा की संरचना, शैली और शिल्प की अत्यंत कुशल नकल कर सकता है। वह किसी विशेष लेखक की शैली में कविता या कहानी जैसा पाठ तैयार कर सकता है और कई बार वह पाठ देखने में प्रभावशाली भी लगता है। किंतु यहाँ यह समझना आवश्यक है कि AI का यह लेखन अनुकरण (Imitation) है, न कि सृजन (Creation)।

मशीन जीवन को जी नहीं सकती। उसके पास न स्मृति होती है, न पीड़ा, न संघर्ष, न प्रेम और न ही मृत्यु का बोध। वह केवल उन अनुभवों से जुड़े शब्दों और संरचनाओं का सांख्यिकीय संयोजन कर सकती है, जो मनुष्य पहले ही लिख चुका है। इसीलिए AI द्वारा रचित साहित्य में भावनाओं का "आभास" तो मिल सकता है, पर उनकी प्रामाणिकता और गहराई नहीं। गजानन माधव मुक्तिबोध का यह कथन इस संदर्भ में अत्यंत सारगर्भित है—

"भविष्य का साहित्य वही होगा जो मनुष्य को मनुष्य बनाए रखे।"[6]

इस कथन का आशय यह है कि साहित्य का अंतिम उद्देश्य केवल मनोरंजन या भाषा-कौशल का प्रदर्शन नहीं, बल्कि मनुष्य की मानवीय चेतना, नैतिकता और संवेदना को जीवित रखना है। यदि कोई रचना इस मानवीय मूल तत्व को खो देती है, तो वह चाहे जितनी भी तकनीकी रूप से सुसज्जित क्यों न हो, वह सच्चे अर्थों में साहित्य नहीं कही जा सकती। यह भी ध्यान देने योग्य है कि साहित्यकार केवल भाषा का शिल्पी नहीं होता, वह अपने समय, समाज और जीवन-स्थितियों का साक्षी भी होता है। वह अपने युग के संघर्षों, विडंबनाओं और सपनों को जीता है और उन्हें अपनी रचनाओं में रूपांतरित करता है। मशीन के पास न कोई "युग-बोध" होता है, न कोई "जीवन-दृष्टि" और न कोई "नैतिक उत्तरदायित्व"।

इस दृष्टि से कृत्रिम मेधा को साहित्यकार के स्थान पर रखना एक बुनियादी भ्रांति होगी। उसका उचित स्थान साहित्यकार के सहायक उपकरण के रूप में है — ऐसा उपकरण, जो लेखक को शोध, संपादन, भाषा-सुधार और सामग्री-संग्रह में सहायता दे सकता है, परंतु स्वयं रचनात्मक चेतना का स्रोत नहीं बन सकता।

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कृत्रिम मेधा चाहे जितनी भी उन्नत क्यों न हो जाए, वह मनुष्य का विकल्प नहीं बन सकती। साहित्य का मूल स्रोत मनुष्य की अनुभूति, संवेदना और चेतना है — और ये गुण किसी मशीन में उत्पन्न नहीं किए जा सकते।

हिंदी साहित्य का भविष्य

भविष्य में तकनीक और साहित्य साथ-साथ चलेंगे। डिजिटल प्रयोग बढ़ेंगे, किंतु मानवीय संवेदना का मूल्य और अधिक बढ़ेगा।[79] संभव है कि आने वाले समय में "मानव-रचित साहित्य" और "मशीन-निर्मित पाठ" के बीच स्पष्ट भेद किया जाने लगे।

कृत्रिम मेधा और डिजिटल तकनीक के तीव्र विकास ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भविष्य का साहित्य तकनीक से अलग होकर नहीं चल सकता। जैसे-जैसे समाज का जीवन अधिकाधिक डिजिटल होता जा रहा है, वैसे-वैसे साहित्य की अभिव्यक्ति, प्रसार और संरचना के रूप भी बदलते जाएँगे। किंतु यह परिवर्तन केवल बाह्य रूपों तक सीमित रहेगा — साहित्य की मूल आत्मा अब भी मानवीय संवेदना, अनुभव और चेतना में ही निहित रहेगी।

भविष्य में यह संभावना प्रबल है कि तकनीक और साहित्य के बीच एक सह-अस्तित्व (Co-existence) का संबंध विकसित होगा, न कि प्रतिस्पर्धा का। तकनीक साहित्य के सृजन, संपादन, प्रकाशन और प्रसार में एक शक्तिशाली साधन बनेगी, जबकि साहित्य तकनीक को मानवीय दृष्टि और नैतिक दिशा प्रदान करेगा। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के पूरक के रूप में विकसित होंगे। डिजिटल प्रयोगों के बढ़ने से साहित्य के नए-नए रूप सामने आएँगे — जैसे डिजिटल उपन्यास, मल्टीमीडिया काव्य, इंटरैक्टिव कथा और वर्चुअल रियलिटी आधारित साहित्यिक अनुभव। इन प्रयोगों से साहित्य की पहुँच और प्रभाव-क्षेत्र दोनों का विस्तार होगा, विशेषकर युवा पीढ़ी के बीच, जो पहले से ही डिजिटल माध्यमों से गहराई से जुड़ी हुई है। इसके साथ ही यह भी संभव है कि भविष्य में साहित्य की दुनिया में एक स्पष्ट वैचारिक और व्यावहारिक भेद स्थापित हो जाए — एक ओर "मानव-रचित साहित्य" और दूसरी ओर "मशीन-निर्मित पाठ"। जैसे आज हम "लोककला" और "औद्योगिक उत्पाद" में अंतर करते हैं, वैसे ही आने वाले समय में पाठक यह जानना चाहेंगे कि कोई रचना मनुष्य के अनुभव और संवेदना से उपजी है या किसी एल्गोरिद्म की गणनात्मक प्रक्रिया से।

इस भेद का एक सकारात्मक परिणाम यह होगा कि मानवीय सृजन की महत्ता और अधिक बढ़ेगी। जिस संसार में मशीनें सब कुछ कर सकती प्रतीत होंगी, वहाँ मनुष्य की अनुभूति, करुणा, संघर्ष और नैतिक चेतना से उपजा साहित्य और भी अधिक मूल्यवान हो जाएगा। मुक्तिबोध के शब्दों में, साहित्य का भविष्य वही है जो मनुष्य को उसकी मनुष्यता की याद दिलाता रहे।

हिंदी साहित्य के संदर्भ में यह परिवर्तन और भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह साहित्य पहले से ही सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों की सशक्त परंपरा से जुड़ा रहा है। यदि हिंदी साहित्य तकनीक को केवल साधन के रूप में अपनाए और अपनी संवेदनात्मक तथा वैचारिक परंपरा को सुरक्षित रखे, तो वह भविष्य में और भी अधिक समृद्ध, व्यापक और प्रभावशाली रूप में विकसित हो सकता है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य का भविष्य न तो पूरी तरह मशीन के हाथों में होगा और न ही तकनीक से विमुख होकर। वह एक संतुलित मार्ग पर आगे बढ़ेगा, जहाँ तकनीक साधन होगी और मनुष्य की संवेदना साध्य।

निष्कर्ष

कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य के लिए न तो पूरी तरह खतरा है और न ही पूर्ण समाधान। यह एक शक्तिशाली उपकरण है। यदि इसका उपयोग विवेक और साहित्यिक चेतना के साथ किया गया, तो यह साहित्य को समृद्ध करेगा; अन्यथा साहित्य की आत्मा संकट में पड़ सकती है।

प्रस्तुत शोध-आलेख के समग्र विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence) का हिंदी साहित्य से संबंध न तो सरल है और न ही एकांगी। इसे केवल संकट या केवल समाधान के रूप में देखना एक अधूरी और सतही दृष्टि होगी। वास्तव में, कृत्रिम मेधा एक शक्तिशाली तकनीकी उपकरण है, जिसकी उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि मनुष्य उसका उपयोग किस उद्देश्य और किस दृष्टि से करता है।

इस अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया है कि जहाँ एक ओर कृत्रिम मेधा ने साहित्य के प्रसार, संरक्षण, अनुवाद और शोध के क्षेत्र में अभूतपूर्व संभावनाएँ खोली हैं, वहीं दूसरी ओर उसने मौलिकता, रचनाकार की भूमिका, संवेदना और साहित्य की मानवीय आत्मा से जुड़े गंभीर प्रश्न भी खड़े किए हैं। यदि साहित्य केवल डेटा और एल्गोरिद्म का परिणाम बनकर रह जाएगा, तो वह अपनी मूल पहचान खो देगा।

साहित्य का वास्तविक मूल्य उसकी मानवीय अनुभूति, नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व में निहित होता है। मशीन इन गुणों की नकल तो कर सकती है, पर उन्हें जी नहीं सकती। इसीलिए यह आवश्यक है कि कृत्रिम मेधा को साहित्यकार का स्थान देने के बजाय उसे साहित्यकार का सहायक माना जाए — ऐसा सहायक, जो शोध, संपादन, भाषा-सुधार और सामग्री-संग्रह में सहयोग करे, परंतु सृजन की केंद्रीय भूमिका मनुष्य के ही पास रहे।

यदि तकनीक का उपयोग विवेक, संतुलन और साहित्यिक चेतना के साथ किया गया, तो वह हिंदी साहित्य को और अधिक व्यापक, सुलभ और समृद्ध बना सकती है। किंतु यदि साहित्य बाजार, गति और मात्रा के दबाव में आकर मशीन-निर्मित पाठों पर निर्भर होने लगे, तो साहित्य की आत्मा, उसकी संवेदना और उसकी सांस्कृतिक गरिमा गंभीर संकट में पड़ सकती है।

अतः आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम तकनीक का मानवीकरण करें, न कि मनुष्य का यांत्रिकीकरण। साहित्य को चाहिए कि वह तकनीक को साधन बनाए, साध्य नहीं। तभी हिंदी साहित्य भविष्य में भी अपनी सृजनात्मक गरिमा, मानवीय मूल्य और सांस्कृतिक दायित्व को सुरक्षित रखते हुए आगे बढ़ सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Ong, Walter J. — Orality and Literacy, 2nd Ed., 2002, Routledge.
2. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र — हिंदी साहित्य का इतिहास, 27वाँ संस्करण, 2015, नागरी प्रचारिणी सभा।
3. सिंह, नामवर — साहित्य और समाज, 10वाँ संस्करण, 2012, राजकमल प्रकाशन।
4. वर्मा, निर्मल — शब्द और स्मृति, 8वाँ संस्करण, 2010, राजकमल प्रकाशन।
5. अज्ञेय — आधुनिक साहित्य: एक दृष्टि, 6ठा संस्करण, 2005, भारतीय ज्ञानपीठ।
6. मुक्तिबोध — एक साहित्यिक की डायरी, 5वाँ संस्करण, 2008, राजकमल प्रकाशन।
7. सिंह, नामवर — दूसरी परंपरा की खोज, 12वाँ संस्करण, 2014, राजकमल प्रकाशन।
8. McLuhan, Marshall — The Medium is the Massage, 1967, Penguin.
9. कुमार, रविकांत — डिजिटल युग और साहित्य, 2018, वाणी प्रकाशन।
10. मिश्र, सत्यप्रकाश — समकालीन हिंदी साहित्य और तकनीक, 2020, लोकभारती।
11. UNESCO — Artificial Intelligence and Culture Report, 2021, Paris

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)